

क्यों सफेद होते हैं हमारे बाल?

नरेन्द्र देवांगन

कुछ शताब्दियों पहले सफेद बालों को अक्लमंदी का द्योतक माना जाता था। किंतु आज हमारी यौवन पसंद संस्कृति के लोग बाल रंगने के उत्पादों पर हर वर्ष करोड़ों रुपए खर्च करते हैं। 40 प्रतिशत औरतें और 8 प्रतिशत पुरुष सफेदी छुपाने के लिए खिजाब का सहारा लेते हैं।

हालांकि हम इस परिवर्तन को बुढ़ापे से जोड़ते हैं लेकिन यह मुमकिन है कि आपकी कनपटियों पर पहले-पहल सफेद बाल मात्र 15 वर्ष की आयु में उग आए हों। 30 वर्ष की उम्र में लगभग एक चौथाई लोगों में सफेद बाल दिखाई देने लगते हैं। किंतु फिर भी हममें से केवल 28 प्रतिशत लोग ही पूरी तरह पके हुए बालों वाले बनते हैं। और हममें से कुछ लोगों का एक बाल भी कभी सफेद नहीं होता है।

सफेद बाल होने के क्या कारण हैं? इसका एक महत्वपूर्ण कारक वंश है। क्लीवलैंड, ओहायो की केस वेस्टर्न रिज़र्व युनिवर्सिटी में त्वचा विज्ञान विभाग के एक प्रोफेसर के अनुसार कॉकेशियन लोगों के बाल 34 वर्ष की उम्र तक काफी कुछ सफेद हो जाते हैं और इस बात की संभावना 50 प्रतिशत होती है कि 50 साल की आयु तक उनके आधे बाल सफेद हो जाएंगे। एक औसत अश्वेत व्यक्ति के बाल 44 वर्ष की उम्र में सफेद दिखने लगते हैं। एक अन्य कारण आनुवंशिकता है। आपके बाल सफेद होने की संभावना तकरीबन उसी उम्र में और उसी तरह होती है जिस तरह आपके माता-पिता या दादा-दादी के बाल सफेद हुए होंगे।

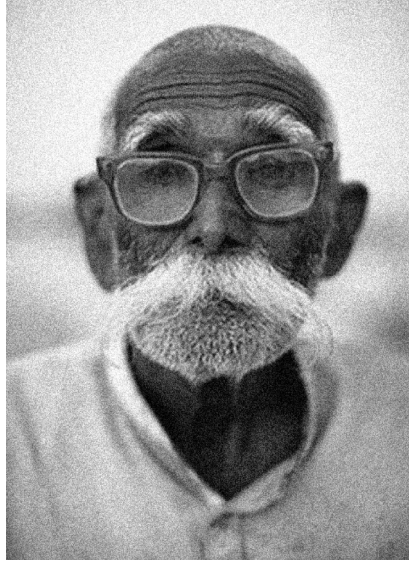
हालांकि बाल किसी भी रंग में जीवंत लग सकते हैं, किंतु वास्तव में बाल उसी मृत पदार्थ किरैटिन प्रोटीन से बने होते हैं जो हमारे नाखूनों में पाया जाता है। जन्म से तीन माह पहले

ही आपके शरीर में रोम छिद्रों की संख्या निर्धारित हो जाती है। सुनहरे बालों के लिए लगभग 1,40,000, काले बालों के लिए 1,08,000 और लाल बालों के लिए 90,000। प्रत्येक रोम छिद्र के नीचे एक रोम कंद होता है जो त्वचा की निचली सतह से पोषण प्राप्त करता है। यह रोम कंद बालों को त्वचा की सतह से ऊपर उठाने में सहायक विभिन्न रसायनों को मिश्रित करता है।

जब अभी एक बाल बन ही रहा होता है तो उसमें मेलेनिन वर्णक के हज़ारों अणु संचित हो जाते हैं। मनुष्यों के केशों में तरह-तरह के रंगों की जो छटा हम देखते हैं वह मेलेनोसाइट नामक कोशिकाओं में बने और मिश्रित हुए केवल दो मूलभूत रंगों की देन है। यूमेलेनिन नामक एक वर्णक हमारे बालों को गहरे काले से लेकर हल्के भूरे तक रंगता है। फेओमेलेनिन नामक दूसरा वर्णक बालों को सुनहरे से लेकर भूरा तक बनाता है।

जन्म के समय कई लोगों के बाल सुनहरे होते हैं,

लेकिन मेलेनोसाइट सक्रिय होने के साथ उनके बाल भी काले होने लगते हैं। बालों के काले होने की धीमी प्रक्रिया बहुधा अधेड़ावस्था तक चलती है। इस दौरान बहुत से सुनहरे बालों वाले युवाओं के बाल भूरे रंग के हो जाते हैं और लाल बालों वाले व्यक्तियों के बाल कथई रंग में परिवर्तित हो जाते हैं। बीस की उम्र के बाद मेलेनिन का उत्पादन धीरे-धीरे कम हो जाता है। पुराने वर्णक की केवल थोड़ी-



सी मात्रा होने के कारण नए उगते बाल सफेद दिखने लगते हैं। जब मेलेनोसाइट पूरी तरह निष्क्रिय हो जाते हैं, तो बाल बिना कोई वर्णक लिए उगने लगते हैं और वे प्रोटीन का स्वाभाविक सफेद रंग ग्रहण कर लेते हैं।

हम जो भूरा रंग देखते हैं वह बहुधा काले और नए सफेद बालों के मिश्रण की वजह से उत्पन्न दृष्टिभ्रम होता है। एक भिन्न रंग होने का कारण भूरे और सफेद बाल काले बालों वाले व्यक्तियों में पहले नज़र आने लगते हैं। यद्यपि हल्के रंग के बालों वाले व्यक्तियों के बाल पूरी तरह सफेद होने की संभावना अधिक होती है। हर्पीज़, टाइफस, मलेरिया और इंफ्लूएंज़ा सरीखी अनेक बीमारियां भी बालों को सफेद कर सकती हैं। बाल सफेद होने के कुछ अन्य कारण घातक आघात, विशेष प्रकार के विकिरण से संपर्क, थायरॉइड की अतिसक्रियता, मधुमेह, कुपोषण, बड़ी आंत का अल्सर और एनीमिया हैं।

यह जानने के लिए कि बाल 'एक ही रात में सफेद' कैसे हो जाते हैं, हमें बालों के प्राकृतिक रूप से बढ़ने के तरीकों को जानना होगा। यह कार्य तीन चक्रों में पूर्ण होता है। बढ़ने की अवस्था में नया बाल आधा इंच प्रति माह की रफ्तार से बाहर निकलता है। 2-6 साल तक बढ़ने के बाद यह विश्रामावस्था में कुछ सप्ताह रुक जाता है। फिर लगभग 3 माह तक बाल पैपिला की बाल बनाने वाली प्रणाली से अलग हो जाता है।

जब दूसरा चक्र शुरू होता है, तो नया उगता बाल पुराने बाल को बाहर धकेल देता है। कभी-कभी अत्यधिक दबाव से उत्पन्न ऐलोपेशिया ऐरेटा नामक स्थिति बालों की जड़ों को नुकसान पहुंचा देती है। यदि इससे पीड़ित व्यक्ति के काले बालों की संख्या अधिक न हो और केवल थोड़े से बाल सफेद हों तो यह रोग एक ही हफ्ते में पुराने काले

बालों को गिरा सकता है। जिससे सफेद बालों का अनुपात पहले से अधिक हो जाता है और बाल कुछ ही दिनों में सफेद हो गए लगते हैं।

विज्ञान में एक धारणा थी कि एक बार सफेद हो चुके बाल कभी भी काले नहीं हो सकते हैं। किंतु हाल के अनुसंधानों से पता चला है कि निष्क्रिय मेलेनोसाइट को फिर से सक्रिय किया जा सकता है और कुछ मामलों में तो बालों का मूल रंग भी प्राप्त किया जा सकता है। विशेषज्ञों का कहना है कि रोगों, दवाइयों और कुपोषण से उत्पन्न बालों की सफेदी को उपचार द्वारा ठीक किया जा सकता है। कुछ स्टीरॉयड रहित जलन दूर करने वाले कारक बालों में दोबारा वर्णक उत्पन्न करते हैं और एनीमिया से ग्रस्त रोगी विटामिन बी-12 का सेवन करें तो सफेद हो चुके बालों का रंग बहाल हो जाता है।

अमरीका की एक केश प्रसाधन सामाग्री कंपनी के उपाध्यक्ष का कहना है, 'हमें आशा है कि 10 वर्ष के भीतर ही हम ऐसा उत्पाद तैयार कर लेंगे जो रंग पैदा करने वाले मेलेनोसाइट्स को पुनः सक्रिय कर सकेगा।'

दूसरी ओर थॉमस कैश नामक एक मनोवैज्ञानिक का कहना है, 'कुछ लोगों की वास्तविक समस्या स्वयं को छोटा महसूस करने की होती है तो वे सफेद बालों पर अपना ध्यान केंद्रित करते हैं। मनुष्य के बालों की सफेदी में परिवर्तन उन्हें तभी आनंद प्रदान कर सकता है जब जीवन के प्रति उनका दृष्टिकोण उचित हो।'

शोधकर्ताओं ने पता लगाया है कि जो लोग बालों को रंगने के प्रलोभन से बचते हैं, वे जल्दी ही बालों के प्राकृतिक रंग के साथ समझौता कर लेते हैं और परेशान नहीं होते। शेष लोगों के लिए अन्य विकल्प लगातार बढ़ते जा रहे हैं।

(स्रोत फीचर्स)



स्रोत के ग्राहक बनने, बनाएं

वार्षिक सदस्यता

व्यक्तिगत 150 रुपए संस्थागत 300 रुपए

सदस्यता शुल्क एकलव्य, भोपाल के नाम ड्राफ्ट या मनीऑर्डर से भेजें।